साम्प्रदायिकता

- कु० पारूल
छात्रा (कक्षा- 8)

प्रस्तावना

भारत वर्ष एक धार्मिक समाज है तथा धर्म यहाँ एक सहज जीवन वृत्ति के रूप में विकसित हुआ है। यह एक सत्ता नहीं। यहाँ विश्व का सबसे पुराना धर्म -'हिन्दू धर्म' के रूप में संचलित है। भारत वर्ष में पाकिस्तान की मुस्लिम आबादी से ज्यादा मुसलमान हैं। एक बड़ी संख्या उन इसाईयों की है, जो विगत हजारों वर्षो से 'यीशू' के नाम की अलख जगाए हुए हैं। 'बौद्ध धर्म' का जन्म स्थान भारत है। 'जैन','सिक्ख धर्म' का प्रादुर्भाव भूमि भी भारत ही है। लुप्तप्राय 'पारसी धर्म' यहीं फल फूल रहा है। इसी भारत भूमि ने विश्व को सबसे अधिक धर्मो का संदेश दिया है। उर्दू कवि 'इकबाल' की यह काव्य पंक्ति उनकी देश प्रेम की कविता से उद्‌द्धत हैं, जिसमें वे भारत की महिमा का गान करते हुए कहते हैं -

''मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना।
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा ॥''

साम्प्रदायिकता का जन्म

प्रत्येक व्यक्ति समाज की जिस व्यवस्था में जन्म लेता है उसी के नियम, कानून, आचरण को धारण करता है, ग्रहण करता है। वास्तव में यहीं आचरण पद्धति 'धर्म' कहलाती है। विभिन्न धर्मो के कुछ ठेकेदारों ने सरकारों की अल्पसंख्यकों की तुष्टीकरण की नीति ने समाज में साम्प्रदायिकता को जन्म दिया।

साम्प्रदायिता है क्या ?

समय के साथ-साथ लोगों ही मानसिकता में भी परिवर्तन होने लगा। अपनी-अपनी विचारधाराओं और अपने-अपने धर्म को एक दूसरे से अच्छा दिखाने के लिये टकराव शुरू हो गया। लोग कहते ही रह गये - 'मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना'। लेकिन बैर के लक्षण दिखाई देने लगे, जिसे 'साम्प्रदायिकता' का नाम दिया गया। भारत देश का सन् 1947 में धर्म के आधार पर विभाजन हो चुका है। लेकन उसके बाद भी धर्म की और साम्पद्रायिकता को लेकर हिन्दू-मुस्लिम दंगे होते रहे।

मजहब क्या है ?

'मजहब' आध्यात्मिक क्षेत्र में ईश्वर, देवदूत पैगम्बर आदि के प्रति मन में होने वाले विश्वास तथा श्रद्धा के आधार पर स्थित वे कर्तव्य कर्म अथवा धारणाएं हैं, जो आचार शास्त्र और दर्शन पर आधारित है। भारत में तीन धर्म प्रमुख हैं - 'हिन्दू धर्म', 'इस्लाम धर्म' तथा 'ईसाई धर्म'। हिन्दू और

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की- 247667

मुसलमान परस्पर टकराते रहते हैं। 'ईसाई धर्म' भी धर्म परिवर्तन में विश्वास रखता है। इकबाल भी मजहब को महत्व देते हुए लिखते हैं -

"हमने यह माना कि मजहब जान है इन्सान की।
कुछ इसी के दम पर कायम है, शान इन्सान की ।।"

भारत में धर्म के नाम पर ही खून की नदियाँ बहीं, भारत राष्ट्र का विभाजन भी मजहब के नाम पर हुआ। लाखों घर बरबाद हुए। कत्लेआम हुआ। अरबों की संपत्ति स्वाहा हुई।

हथियार के रूप में साम्प्रदायिकता

दुर्भाग्य से आज हर चीज राजनीति के कुचक्र में पिस रही है। देश भक्ति भी इससे नहीं बची। गीत यहाँ 'राष्ट्र-भक्ति' के गाए जाते हैं तथा कार्य 'देश-द्रोह' के होते हैं। राजनीति में सत्ता हासिल करने के एक महत्वपूर्ण हथियार के रूप में धर्म का प्रयोग किया जाने लगा है। साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देने में आतंकवाद का भी हाथ है। इसका उदाहरण यदि राज्य जम्मू कश्मीर में देखा जाये तो इसका मकसद चुनचुनकर एक ही सम्प्रदाय के लोगों को मारना या राज्य से बाहर निकलवा देना प्रतीत होता है।

" जब भारत की स्थापना धर्म निरपेक्षता के आधार,
पर हुई तो ये धर्मो का टकराव क्यों ?
जर्रे-जर्रे पर है खुदा का जलवा,
मत करो खुदा के नाम पर दंगा।"

हाल ही के वर्षो में एक ऐसी जमात सामने आयी है जो जाति से एक धर्म में रहते हुए बुद्धि से दूसरे धर्म की वकालत करने को धर्म निरपेक्षता का सबूत मानती है।

साम्प्रदायिकता एक अभिशाप

साम्प्रदायिकता के मामले में एक पक्ष को पूरी तरह दोषी ठहराने से बात नहीं बनती। क्योंकि, साम्प्रदायिकता की ताली कभी एक हाथ से नहीं बजती। हाल ही में हुए 'गोधरा' व 'गुजरात' काण्ड ने हिन्दू-मुस्लिम समाज के मुँह पर तमाचा मारा है। अलग मजहब के लिए अलग नारे का जब मुँह खुलेगा, तो देश में समस्याएं ही होंगी। भारत वर्ष के अभी और टुकड़े किये जाने की गुंजाइश के बारे में जो लोग सोचते हैं उन्हें यह बात जान लेनी चाहिये कि इससे देश को क्षति पहुँचाकर पूरे समाज को क्षतिग्रस्त करने की कोशिश होगी।

देश की विभिन्न राजनैतिक पार्टियों ने मात्र वोट हासिल करने के लिए जिस प्रकार अल्पसंख्यकों की तुष्टीकरण की नीति आरम्भ की उससे यह तो पता नहीं कि इससे उन वर्गों को

कितना लाभ मिला परन्तु एक बात बहुत साफ है कि इसने बहुसंख्यकों में एक धर्मान्धवादी वर्ग तैयार करने में जरुर मदद की । कहते हैं

'कण-कण में व्यापे राम ।
मत भडकाओं दंगा लेकर उनका नाम ।।'

कोई यह नहीं सोचता कि इन सब से आखिर क्या फ़ायदा होता जहाँ लोग दंगों की आग चढ़ जाते हैं । मुझे दुःख इस बात का भी है कि इससे विश्व में देश की इज्जत कम होती है , सामाजिक आर्थिक व्यवस्थाएं प्रभावित होती हैं ।

उपसंहार

साम्प्रदायिकता अपने आप में एक जहर है । अगर एक में है तो निश्चय ही यह सब में तेजी से फैलेगा । अगर साम्प्रदायिकता के लहर को सीमित करना है तो हमें इसकी धारा को उद्‌गम से लेकर मुहाने तक देखना होगा । अपनी भावना और अपनी सोच को उदार बनाना होगा । एक धर्म की संवेदना से दूसरे को जुड़ना होगा । धर्म के प्रति लोगों की सोच में परिवर्तन लाना होगा । आपसी प्रेम की भावना व झुकने की शक्ति से दूसरों की भावना को जीतना होगा । हमें आशा नहीं छोड़नी चाहिए और ना ही उन्माद से कोई कार्य ।

- जय हिन्द -

हिन्दी का सम्मान देश के संविधान का सम्मान है ।